नाचे दुर्गा कमला शारद. काली छवि विकराला।
सावित्रि का राग गायत्री. सैन वैन कातारा।।
शंख नाद की धूम मची है. डमरू शोर कराला।
रारंग सारंग बजे सारंगी. बीन सितार सुहाला।।

सुरति धुन है उद्गीत की बाणी. ओडम् ओडम्का ताला।
श्रोतागण सब सुनने आए. मन में भय निहाला।।

साधु दृष्टा साक्षी रूप है. सुख–दुख मन से टाला।
जिसने अपना रूप बिसारा. उर उपजा दुख शाला।।
साक्षी देंखं विमल तमाशा. चित रहे सुखी सुखाला।
भूल भ्रम में जो कोई आया. सहे कर्म का भाला।।
रैन का सपना जगकी लीला. स्वपन धन और माला।
आंख खुली तब कुछ नाहि दशा गुप्त जो देखा भाला।।

राधास्वामी सन्त रूप धर आए. दीन बन्धु सुदयाला।
प्रेम प्याला हमें पिलाया. सहज किया मतवाला।।

(जो महापुरूष तत्व ज्ञान के अनुभवी हैं और सब योग का अनुभव समझ गए हैं तथा जिनको अभी तक अनुभव नहीं हुआ है तो कोई बात नहीं। वे मन. वचन व कर्म से सच्चे व पवित्र बनकर लगन से अनुभव की चाह तथा इच्छा रखकर काम करें। जितनी तडफ और लगन होगी उतनी ही जल्दी उनको अनुभव हो जायेगा। जैसे कहा है–)

फेज का दर है खुला बन्द नहीं हरगिज।
शर्त यह है कि मांगने कोई सायल आए।।

और जिन धार्मिक व ज्ञान देने वाले सजजनों का कामांग तृप्त नहीं हुआ है और वह मजबूर है इस कामांगसे. तो उनसे मेरी यह प्रार्थना है कि वे अपनी गुरू.पीर. शंकराचार्य तथा मुनियों की वेश–भूषा उतार कर, साधारण वेशभूषा पहन कर सांसारिक मनुष्यों की